डॉ. अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज, आरा

हिन्दी गद्य का विकास (आधुनिक काल)

16.07.20

प्रश्न : आधुनिक हिन्दी गद्य के विकास पर एक निबंध लिखिए।

उत्तर : आधुनिक काल में गद्य अपना एक विशिष्ट स्थान लिए हुए है। इस युग में गद्य का कल्पनातीत विकास हुआ, किंतु गद्य के साथ पद्य का भी विकास इस युग की अपनी विशेषता है। गद्य के आरंभिक काल में पद्य का ही बोलबाला था, भक्तिकाल और रीतिकाल के तर्ज पर पद्य रचना की एक लंबी परंपरा थी, इसलिए आधुनिक काल के प्रारंभ में पद्य-रचनाओं का ही बोलबाला था।

गद्य के क्षेत्र में नवीनता लाने के लिए भारतेन्दु ने गद्य लेखन की शुरुआत की। गद्य को परिष्कृत और परिमार्जित कर उसको एक नया रूप दिया। अपने काव्य-भाषा में भी उन्होंने अपने कवित्त और सवैयों को त्याग अपने अभीष्ट भावों को अर्पित किया। इसके सुधार के लिए उन्होंने कवि समाज स्थापित किया। समस्यापूर्ति द्वारा कवियों को प्रेरणा देने की सुंदर योजना बनायी। इस प्रकार भाव, भाषा-शैली की दृष्टि से उन्होंने काव्य में नवीनता प्रदान की। कविता का विषय स्वदेश, स्वभाषा, तथा स्वधर्म को बनाया। भारतेन्दु जी की राष्ट्रीय भावनाओं ने देश के लेखकों में प्राण फूंक दिए।

भावाभिव्यक्ति के साहित्यिक रूप हैं (1) गद्य रूप (2) पद्य रूप। पद्य छन्दबद्ध एवं गीतात्मक होने के कारण सहज ही सुरक्षित रह लेता है। मुद्रण के विकास के साथ पद्य का विकास सहज ही था। किंतु जैसे-जैसे मुद्रण कला का विकास होता गया वैसे-वैसे गद्य साहित्य भी बढ़ता गया। हिन्दी साहित्य का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट ही पता चलता है कि यह समय संक्रांति काल का था। साहित्य का विकास साहित्यिक, धार्मिक, राजनीतिक तथा सामाजिक दृष्टि से भी देर से हुआ। उस समय देश में—

P.T.O

रही और निराशा का वातावरण थी। फिर परिणाम स्वरूप क्षेत्र में मनोरंजक साहित्य, जैसे नाटक, कहानी और तथा उपन्यासों का अभाव था। संवत 1660 में नाभा-दास जी ने 'अष्टयाम' पुस्तक ब्रजभाषा गद्य में लिखी। संवत 1680 के आस-पास वैकुण्ठमुनि ने 'अगहन-महात्म्य' नामक पुस्तक गद्य में लिखी। इस प्रकार ब्रजभाषा में कुछ गद्य की पुस्तकें आयीं।

आरम्भ में कबीर और अमीर खुसरो की भाषा में कुछ खड़ी-बोली के लक्षण मिलते हैं, पर वे व्यवस्थित नहीं हैं। अकबर के समय में कवि गंग ने 'चंद छंद बरनन की महिमा' गद्य की पुस्तक खड़ी-बोली में लिखी है। इससे स्पष्ट है कि उर्दू से भिन्न खड़ी-बोली शिष्ट समाज की भाषा हो चली थी।

संवत् 1798 में रामप्रसाद निरंजनी व्यवस्थित भाषा में 'भाषा-योग वशिष्ठ' लिखा एवं बसवा निवासी दौलत-राम ने रविषेणाचार्य कृत जैन पद्म पुराण का भाषानुवाद किया। इससे ज्ञात होता है खड़ी-बोली उस समय तक समाज में अपना स्थान बना रही थी। इस प्रकार उस समय दो प्रकार की भाषाएँ मिलती हैं —

(1) खड़ी बोली का सामान्य देशी रूप (2) सरकारी रूप।

संवत 1860 में फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना अंग्रेजी सरकार द्वारा की गई। जॉन गिलक्राइस्ट ने देशी भाषा में कुछ गद्य की पुस्तकें लिखने के लिए कुछ लेखकों को एक दल बनाया। उस समय मुंशी सदासुख लाल, सैयद इंशा अल्ला खान, श्री लल्लू लाल तथा सदल मिश्र ने गद्य के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान किया।

मुंशी सदासुखलाल ने विष्णु पुराण को लेकर एक पुस्तक लिखी जो पूर्ण रूप से उपलब्ध नहीं जिसमें उन्होंने कुछ तत्सम शब्दों का प्रयोग किया। संवत 1860 में इंशा अल्ला खान ने 'रानी केतकी की कहानी' लिखी। इसकी भाषा उर्दू मिश्रित खड़ी बोली थी। इसके पश्चात सदल मिश्र और लल्लू लाल ने 'नासिकेतोपाख्यान' नामक पुस्तक की रचना की। 1860 ई० के आसपास ही एक ईसाई प्रचारक विलियम केरे ने धर्म सम्बन्धी पुस्तकों का अनुवाद शुद्ध खड़ी बोली हिन्दी में किया। इससे विचलित होकर राज-

राम मोहन राय ने उपनिषद् और ब्रह्मज्ञान के द्वारा हिन्दू धर्म का प्रचार करने लगे। ईसाई मत के प्रचार को रोकने के लिए स्वामी दयानंद भी इस आंदोलन में कूद पड़े और वे 'सत्यार्थ प्रकाश' नामक पुस्तक लेकर आए। इस तरह हिन्दी गद्य का प्रचार-प्रसार रफ्तार पकड़ने लगा। इसके पूर्व राजा लक्ष्मण सिंह भी गद्य का विकास में अपना योगदान दे चुके थे। इनके हिन्दी भाषा में सुधार के काम हुए।

भारतेन्दु हरिश्चंद्र के उदय ने हिन्दी साहित्य में गद्य के सूत्रपात का युग है। इन्होंने लेखकों का एक विशाल मंडल तैयार किया तथा अन्य लेखकों को हिन्दी में लिखने को प्रेरित किया। उन्होंने हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए कई अखबार और पत्रिकाएँ निकालीं। उनके समय के लेखकों में प्रताप नारायण मिश्र, राधाकृष्ण दास, श्री निवास भट्ट आदि लेखकों ने अपनी भाषा और शैली से साहित्य में विविधता लाने का काम किया था। भारतेन्दु की शैली बड़ी ही सरस और सरल थी। उन्होंने लोकोक्तियों और मुहावरों के द्वारा अपनी रचनाओं को सहज बनाने का प्रयास किया। हास्य और व्यंग्य की सुंदर अभिव्यक्ति उनकी रचनाओं के सुंदर श्रृंगार थे। अपने प्रयत्न के द्वारा उन्होंने गद्य को नवीन जन्म दिया।

भारतेन्दु के पश्चात् हिन्दी साहित्य में द्विवेदी जी का प्रादुर्भाव हुआ। यद्यपि भारतेन्दु समय के समय गद्य का पर्याप्त विकास हो चुका था किंतु व्याकरण संबंधी त्रुटियाँ उनमें रहती थीं। द्विवेदी जी ने व्याकरण की शुद्धता को मुख्य माना उसमें सुधार किया। द्विवेदी जी ने 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से लेखकों की रचनाओं में पर्याप्त सुधार करते थे उनकी अशुद्धियों को दूर करते थे। इस प्रकार हिन्दी गद्य का विकास और भी हुआ। बाबू श्याम सुंदर दास, पं॰ रामनारायण, ठाकुर शिव सिंह ने काशी प्रचारिणी सभा की स्थापना की। उस सभा ने ~~सबका~~ हिन्दी खड़ी बोली के प्रचार-प्रसार के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा दी। इस सभा का उद्देश्य था — नागरी अक्षरों का प्रचार तथा हिन्दी साहित्य की वृद्धि।

P.G. ~~B~~ semester II
CC-5
'Hindi Gadya ka Vikas'